फरीदाबाद
मजदूर समाचार
मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

नई सीरीज नम्बर 120 जून 1998

मर्दानगी के फन्दे

13 मई को **हिन्दुस्तान वायर लिमिटेड** के अन्दर स्थित **सीरॉक क्रेडिट** के 13 वरकर मजदूर लाइब्रेरी आये। बातचीत में सीरॉक मजदूरों ने बताया कि पहले वे अलग- अलग ढँग से पर आपस में तालमेल करके मैनेजमेन्ट से अपनी समस्याओं पर जूझते रहते थे। रोज- रोज की इस चिकचिक से परेशान प्रोडक्शन मैनेजर ने कहा कि अलग- अलग कदम उठाने की बजाय एकता बनाओ तब मैनेजमेन्ट तुम्हारी सुनेगी। कई बार प्रोडक्शन मैनेजर ने यहाँ तक कहा कि यूनियन बनाओ पर सीरॉक में कार्यरत 25 परमानेन्ट वरकर साहब की बातों को अनसुनी करते रहे। इस पर प्रोडक्शन मैनेजर ने इन मजदूरों को नामर्दगी के लिये धिक्कारा। मजदूर जोश में आ गये। एक सीरॉक मजदूर के शब्दों में " हम मर्दानगी के चक्कर में आ गये और फँस गये।" एटक की यूनियन बनाई और डिमान्ड नोटिस दिया। मैनेजमेन्ट ने 30 हैल्पर हटा दिये जो कि कैजुअल वरकर थे और 25 आपरेटरों से हैल्परों का काम भी करने को कहा। जोश- खरोश से भरे आपरेटरों ने हैल्परी करने से इनकार किया और मैनेजमेन्ट के ले ऑफ प्रस्ताव को मान गये। एक सीरॉक मजदूर के शब्दों में : "मर्दानगी के चक्कर में हम आपरेटर के संग- संग हैल्पर का काम करने से इनकार नहीं करते तो हम फैक्ट्री के अन्दर रहते और मैनेजमेन्ट की नाक में दम कर देते।" एटक लीडर की मैनेजमेन्ट से मिलीमगत देख कर सीरॉक वरकरों ने इफ्टू यूनियन का पल्ला पकड़ा। ले ऑफ जारी रही और 45 दिन की कानूनी अवधि पूरी करने के बाद मैनेजमेन्ट ने इन मजदूरों को 15 अप्रैल को एक महीने का छँटनी नोटिस दे दिया— 15 मई तक हिसाब ले लो नहीं तो 16 को मनीआर्डर द्वारा मैनेजमेन्ट भेज देगी। सीरॉक मजदूरों को साफ- साफ दिखने लगा है कि उन्हें गरम करके फँसाया गया है।

चाय की चुस्कियाँ

डेढ साल से कई डिपार्टमेन्टों में मजदूर चाय- पकोड़े- लड्डु फ्री ले रहे हैं। अचानक 18 मई को **एस्कोर्ट्स फस्ट प्लान्ट ट्रैक्टर डिविज़न** में मैनेजमेन्ट ने नोटिस लगाया कि ट्राली लूटते हो ; दुराचरण है ; एक्शन ले सकते हैं। और, फस्ट शिफ्ट के फस्ट हाफ में प्लान्ट में चाय- पकोड़े नहीं पहुँचे। मजदूरों ने मैनेजमेन्ट से शिकायत की तो प्रोडक्शन मैनेजर मिस्टर मुन्शी ने उकसाने के लिये कहा कि पैसे एडवान्स दो तभी चाय आयेगी। बड़े हमले के लिये 15 दिन से एस्कोर्ट्स मजदूरों को गरम करने में तेजी लाई हुई मैनेजमेन्ट की चाल को समझ कर मजदूर शान्त रहे और प्रोडक्शम जारी रखा।

फस्ट शिफ्ट के सैकेन्ड हाफ में चाय के लिये निर्धारित पौने दो बजे चाय नहीं आई तब भी वरकर चुपचाप अपनी मशीनों पर काम करते रहे। साढे तीन बजे चाय की हर ट्राली के साथ तीन परसनल डिपार्ट के, तीन प्रोडक्शन डिपार्ट के तथा तीन सैक्युरिटी वाले आये। एस्कोर्ट्स मजदूर इस छेड़खानी पर भी मर्दानगी के चक्कर में नहीं आये। वरकर अपनी- अपनी मशीन पर रहे और चाय का बॉयकॉट किया। एस्कोर्ट्स मैनेजमेन्ट हाथ मलती रह गई और चाहते हुये भी माहौल को और गरम करने के लिये कोई एक्शन नहीं ले सकी।

जूतों की माला

इधर काफी दिन से **झालानी टूल्स** के मजदूर मर्दानगी के चक्कर में नहीं आ रहे। मजदूरों के 40 करोड़ रुपये दबाये बैठी मैनेजमेन्ट ने भागने के लिये एक के बाद दूसरी स्कीम रची है पर झालानी टूल्स मजदूरों ने उन सब को फुस्स कर दिया। हाल ही में सैकेन्ड प्लान्ट में फोरजिंग डिपार्ट के 5 को सस्पैण्ड करके मैनेजमेन्ट ने भड़काने की कोशिश की पर मजदूर शान्त रहे। तब फस्ट प्लान्ट की ट्रिमिंग डिपार्ट में मैनेजमेन्ट ने पँगा लिया पर मजदूरों ने दँगा नहीं किया।

सरकारी साहबों को शिकायत दर शिकायत से परेशान करते तथा सड़कों पर जगह- जगह गत्ते लगा कर तीन लाख से ऊपर मजदूरों से नाते जोड़ते, खुद कदम उठा रहे झालानी टूल्स के वरकरों की बढ़ती संख्या मैनेजमेन्ट पर घेरा कसती जा रही है। ऐसे में 25 मई को सुबह एक गिरोह के लोग फस्ट प्लान्ट के मजदूरों को " तनखा के बारे में पूछना है" कह कर धोखे से यूनियन दफ्तर ले गये। वहाँ यूनियन के महासचिव की जमकर पिटाई की गई और गले में जूतों की माला डाली गई। मारपीट के बाद सैकेन्ड प्लान्ट के मजदूर भी एकत्र हुये और महासचिव से फस्ट व सैकेन्ड प्लान्ट के गेटों पर लगे सीटू झण्डे उतरवाये। सब वरकर लीडर के पिटने से खुश थे और अफसोस कर रहे थे कि सब लीडर नहीं पिटे। लेकिन...... लेकिन लीडर के पिटने की खुशी में भी झालानी टूल्स मजदूरों ने मर्दानगी नहीं दिखाई और अपने- अपने प्लान्ट में जा कर सब मजदूर अपनी- अपनी मशीनें चलाने लगे। मजदूर समझ रहे थे कि गिरोहों को मार- पीट द्वारा हिंसा का माहौल बनाने के लिये मैनेजमेन्ट पैसे दे रही है ताकि वरकरों के 40 करोड़ रुपये हड़प कर मैनेजमेन्ट भाग सके। इसीलिये 26 मई को फस्ट प्लान्ट के मजदूरों ने मार- पीट में अगुआई करने वाले गिरोह के लोगों की वरकरों को एस.पी. दफ्तर ले जाने की चाल को फेल कर दिया। दोनों प्लान्टों के मजदूर अपने- अपने प्लान्ट में कार्यरत रहे और कोई वरकर एस.पी. दफ्तर नहीं गया। बहादुरी और मर्दानगी के जाल में नहीं फँस कर झालानी टूल्स मजदूरों ने मैनेजमेन्ट की भाग निकलने की एक और स्कीम को फुस्स कर दिया।

एस्कोर्ट्स में मर्दानगी का खतरा

बड़े पैमाने पर मजदूरों की छँटनी करना दो- तीन साल से एस्कोर्ट्स मैनेजमेन्ट के एजेन्डा पर सबसे ऊपर है। लेकिन एस्कोर्ट्स मजदूरों द्वारा स्वयं को किसी के गिरवी नहीं रखने, किसी को भी अपनी नकेल

(बाकी पेज तीन पर)

मजदूर समाचार की हम पाँच हजार प्रतियाँ फ्री बाँटते हैं।
आप भी लिखिये। अपनी बातें खुल कर कहिये, फ्री में कहिये।

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद—121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

मैनेजमेन्टों का जनाजा

प्रबन्धकों और सरकार के श्रम विभाग के कठमुल्लों की मिलिभगत और लालच लिप्सा के कारण श्रमिकों का चहुँमुखी शोषण हो रहा है जिसकी आवाज़ सुनने वाले न तो प्रबन्धक हैं, न ही सरकार है और न ही दुकान खोल कर बैठे भ्रष्ट ट्रेड यूनियन नेता।

लेबर आफिस, लेबर कोर्ट मात्र मैनेजमेन्टों के हाथ की कठपुतली बन कर रह गये हैं। अगर गिना-चुना ईमानदार कोई अधिकारी होता भी है तो उसे भी कानून की हिफाजत करने के लिये अपनी ही जिन्दगी से हाथ धोना पड़ सकता है। मंत्रियों की धमकी सुन-सुन कर उसे अपना रास्ता बदलना ही पड़ेगा। फरीदाबाद औद्योगिक क्षेत्र में मजदूरों की व्यथा इतनी गम्भीर और चिन्ताजनक है कि उन्हें अपनी व अपने बच्चों की परवरिश करने के लिये अनैतिक कार्य करने के लिये मजबूर होना पड़ सकता है।

फरीदाबाद में ईस्ट इंडिया कॉटन मिल्स, प्रताप स्टील, सपना-सोभाग टैक्सटाइल्स, झालानी टूल्स, हिन्तकारी पोट्रीज आदि कम्पनियाँ ज्वलन्त उदाहरण हैं, चश्मदीद गवाह हैं दर-बदर भटक रहे वरकरों के। झालानी टूल्स के वरकर तो सवेरे-सवेरे सड़कों पर कतार में खड़े अपनी दास्तान सुनाते मिलेंगे, हाथ में लिये गत्तों पर प्रबन्धकों द्वारा शोषण की कहानी लिखी होती है और मजदूरों से सुझाव माँगते हुये मौन खड़े हो कर अपनी पीड़ा और दुख तथा संकल्प को दर्शाते हैं।

जहाँ तक मेरा अपना अनुमान है, सुरक्षा ईमानदार की नहीं है बल्कि सुरक्षा चोर-लुटेरों, रिश्वतखोरों और व्यभिचारियों के लिये है। दबिश देने से पहले ही आगाह कर दिया जाता है कि मैं आ रहा हूँ। छापा मारने के पहले ही मुजरिमों और माफिया को सूचना दे दी जाती है कि अपनी शरणस्थली बदल दें।

हमारे मजदूर भाइयों-बहनों की भाग्य की रेखा में लिखा ही नहीं है कि अपनी मेहनत से अपना पेट भर सकें। बल्कि लुटेरों के भाग्य में अवश्य ही है कि बैठे-बैठे हमारा खून पीते रहें और हमें निचोड़ कर कंकाल की तरह रास्ते पर किनारे खड़ा कर दें।

झालानी टूल्स के मजदूरों से हमारे अन्य मजदूर साथियों को सबक सीखना होगा क्योंकि कल हमारे साथ और परसों आपके साथ ऐसी दुखद घड़ी आ सकती है। आज जिस संयम और शान्ति के साथ अपनी पीड़ाओं को गत्तों पर लिखे हुये सड़क के किनारे भूखे-प्यासे मजदूर मिल रहे हैं वे प्रशन्सा के पात्र हैं। आज नहीं तो कल अवश्य ही इन मजदूरों की आवाज और दशा रंग लायेगी। कम से कम प्रशासन का मुँह काला तो कर रहे हैं। और कब तक, आखिर कब तक प्रबन्धक व सरकार अपनी आँखें बन्द किये हुये मजदूरों से अपने मुँह पर कालिख पुतवा कर नँगा नाच करेंगे। यह भ्रष्ट प्रशासन और अफसरशाही पर वह तमाचा है जिसकी आवाज मजदूर तो सुन रहे हैं मगर प्रशासन और निकम्मे अफसरान को महसूस नहीं हो रहा है।

(पत्र हमने कुछ छोटा कर दिया है।)

10.5.98 — दीप सुलतानपुरी, फरीदाबाद

बी.के. अस्पताल

12 मई को आयशर फैक्ट्री के गेट पर अखबार लेते समय एक मजदूर ने लिख कर दिया :

वैसे तो बी.के. अस्पताल मजदूरों का अस्पताल है पर वहाँ कदम-कदम पर हेरा-फेरी ही दिखती है। गेट से घुसते ही साइकिल स्टैन्ड है जिसके बोर्ड पर लिखा है कि साइकिल 1 रुपया, स्कूटर 2 रुपये और कार 3 रुपये पर वहाँ स्टैन्डवाला जबरदस्ती 2,3,5 वसूलता है और कहो तो लड़ता है। ओ.पी.डी. में जाओ तो बूढे और जवान एक ही लाइन में खड़े रहते हैं। रिश्तेदार और जानकार आते ही पर्ची बनवा कर ले जाते हैं— देखने वाले देखते ही रह जाते हैं। ऐसा कब तक चलेगा ?

12.5.98 — आयशर का एक मजदूर

फैक्ट्री में चिपका पर्चा

(झालानी टूल्स के प्लान्टों में अपनी बातें कहने के लिये मजदूर हाथ से लिख कर, फोटो कापी करके पर्चे चिपकाते हैं और ट्रालियों आदि-आदि पर लिख कर अपनी भावनायें व विचार व्यक्त करते हैं। उठ-बैठ के ठीयों पर चर्चायें तो हैं ही। यहाँ हम एक पर्चा दे रहे हैं।)

मैनेजमेन्ट की चालों से सावधान !

साथियो, खुद कदम उठाते हुये जगह-जगह शिकायतें करके और सड़कों पर गत्ते लगा का हमने मैनेजमेन्ट की हमारे पैसे डकार कर रफुचक्कर होने की स्कीम को गड़बड़ा दिया है। सर्विस-ग्रेच्युटी, 21 महीनों की बकाया तनखा, चार साल का बोनस, तीन साल का एल टी ए, 6 साल के वर्दी-जूतों आदि के रूप में हर मजदूर के डेढ—दो लाख रुपयों की मैनेजमेन्ट देनदार है। इतनी मोटी रकम हजम करने के लिये मैनेजमेन्ट माहौल बनाने में जुटी है। इसी सिलसिले में मैनेजमेन्ट ने गुटों के बीच मारपीट करवाई है। ठँडे दिमाग से सोच-विचार करना और कदम उठाना हम मजदूरों के लिये बेहद जरूरी हो गया है।

अपने पैसे वसूलने के लिये आओ शिकायतें करें, गत्ते लगायें, महिलाओं-बच्चों को डी.सी. के पास भेजें तथा अन्य कदमों पर विचार करें। शान्त रहें और और प्रोडक्शन जारी रखते हुये कदम उठायें।

मैनेजमेन्ट अगर भाग ही जाती है तो अन्य बन्द फैक्ट्रियों के मजदूरों के अनुभवों से सीख ले कर फैक्ट्री की ईंटें उठानी शुरू करेंगे ताकि सरकार पर इतना दबाव पड़े कि हमारे पैसे हमें दिलाने को मजबूर हो।

साथियो सावधान !

27.5.98 — झालानी टूल्स के कुछ मजदूर

रतनचन्द हरजसराय

13 मई को रतनचन्द हरजसराय मोल्डिंग प्रा.लि., 19/6 मथुरा रोड़ के मजदूरों की तरफ से प्रधानमन्त्री को भेजे पत्र में लिखा है :

फैक्ट्री में 100 मजदूर 10 से 25 वर्षों से कार्यरत हैं। वरकरों को बिना हिसाब दिये फैक्ट्री बन्द करने के लिये प्रबन्धकों ने 9 मई को मजदूरों से मार-पीट की और फैक्ट्री बन्द करने का नोटिस लगा दिया। छह साल पहले इसी मैनेजमेन्ट ने 19/6 मथुरा रोड़ पर ही स्थित सिन्थेटिक रेजिन एण्ड पोलीमर कम्पनी और केमिको प्लास्टिक कारपोरेशन को बन्द कर दिया था और आज तक उन मजदूरों के न तो पी.एफ. के पैसे जमा करवाये हैं और न ही मजदूरों का हिसाब दिया है। रतनचन्द हरजसराय मोल्डिंग के मजदूरों के भी पी.एफ. तथा ई. एस. आई. के पैसे दो साल से जमा नहीं करवाये हैं। कई शिकायतें करने के बावजूद पी.एफ. कमिश्नर ने कोई कार्रवाई नहीं की है।■

तायोमा इंजिनियरिंग

तायोमा इंजिनियरिंग इन्डस्ट्रीज प्रा.लि., सैक्टर-24, प्लाट नं. 377 के प्रबन्धक गुण्डागर्दी करते हैं और गुण्डे रखते हैं। कोरे वाउचरों और एफिडेविट पर जबरन हस्ताक्षर करवाते है। नियुक्ति पत्र नहीं देते। न्यूनतम वेतन नहीं देते। वेतन स्लिप नहीं देते और हाजरी रजिस्टर पर नहीं लगाते। फन्ड काटते हैं, स्लिप नहीं देते। ई.एस.आई. काटते हैं, कार्ड नहीं देते। इसी कारण मजदूर अपने हक माँग रहे थे कि 7.6.97 को मैनेजमेन्ट ने कम्पनी में 40 गुण्डे बुलाये और मार-पीट करवाई। 9.6.97 को मैनेजमेन्ट ने 5-7 साल से नौकरी कर रहे 8 मजदूरों को कम्पनी से निकाल दिया।

कम्पनी के अन्दर कुछ लड़कियाँ काम करती हैं। सुपरवाइजर लर मी ने 3 लड़कियों से छेड़छाड़ की तो एक लड़की ने चप्पलों से उसकी पिटाई की। मैनेजर धर्मपाल ने इन्दु नाम की लड़की से कोरे कागज पर साइन कराये और बिना हिसाब दिये उसे निकाल दिया। इस बात पर इन्दु ने श्रम विभाग में मैनेजर धर्मपाल सिंह को चप्पलों से पीटा। मैनेजमेन्ट के लोग कम्पनी के अन्दर शराब पीते हैं और बकवास करते हैं।

हैल्पर को 1000 रुपये तनखा देते हैं। ग्रेड किसी को भी नहीं देते।

21 व 22 मई 98 — तायोमा इंजिनियरिंग के मजदूर

मर्दानगी के फन्दे (पेज एक का बाकी)

नहीं पकड़ाने और सब प्लान्टों में मजदूरों द्वारा लगातार खुद कदम उठाने के अनन्त सिलसिले ने मैनेजमेन्ट को छँटनी के लिये बड़ा हमला करने से रोक रखा है। अब लगता है कि मैनेजमेन्ट ने छँटनी के लिये दीर्घकालीन एग्रीमेन्ट को जरिया बनाने का फैसला किया है। इसीलिये 22 साल से जारी पैकेज के सिलसिले को ठुकरा दिया है, यानि, ढेर-सारे काम के बोझे के बदले में मुट्ठी-भर मुँगफली देने तक से इनकार कर दिया है और मजदूरों पर बड़े हमले के लिये माहौल बनाने में जुट गई है। एक तरफ वार्निंग-चार्जशीट-सस्पैन्शन, ट्रान्सफर, वेतन में कटौती और दूसरी तरफ आर-पार की बातों वाले दो पाटों में मजदूरों को पीसने के लिये मैनेजमेन्ट माहौल बना रही है। बड़े हमले की तैयारी के सिलसिले में बड़े कारपोरेट साहब एच.एन. अरोड़ा ने हर प्लान्ट के बॉस के साथ 19 मई को "केवल मैनेजरस् व सुपरवाइजरस् को सम्बोधित" एक पत्र लिखा है जिसमें इन लोगों को हमले के लिये कमर कस कर तैयार होने के लिये प्रेरित व उत्साहित किया गया है।

ऐसे में एस्कोर्ट्स मजदूरों का बहादुरी, मर्दानगी के चक्कर में आना खतरे ही खतरे लिये है। किसी प्लान्ट से 800 तो किसी से 600 कैजुअल वरकर बाहर करने का यह असर पड़ा है कि हर परमानेन्ट मजदूर द्वारा अपना निर्धारित प्रोडक्शन देने के बावजूद फाइनल प्रोडक्ट मई माह में 25 प्रतिशत के आस-पास बने हैं। मैनेजमेन्ट वेतन काटने के नोटिस पर नोटिस लगाती रही है और 30 मई को स्टाफ की जो तनखा बनाई गई है उसमें कटौती की गई है। इससे जाहिर है कि 7 जून को जब मजदूरों को मई का वेतन दिया जायेगा तो उसमें कटौती होगी। पूरा निर्धारित प्रोडक्शन करने के बावजूद मैनेजमेन्ट द्वारा काम धीमा करने की आड़ में वेतन काटने के खिलाफ कुछ मजदूर टूल डाउन करने की सोच सकते हैं पर अनुभवों की रौशनी में इस पर गम्भीरता से विचार करने की जरूरत है। बड़े हमले के लिये कई फैक्ट्रियों में मैनेजमेन्टों ने पहले तो उकसा कर मजदूरों को टूल डाउन के लिये धकेला और फिर शर्तों पर दस्तखत करने को फैक्ट्री में प्रवेश के लिये जरूरी बनाया। पहले ही से गरम किये मजदूरों द्वारा ऐसे में दस्तखत नहीं किये जाते और वे फैक्ट्री के बाहर बैठ जाते हैं, हड़ताल हो जाती है। तब मैनेजमेन्टों ने मजदूरों को कुचल कर अपने लक्ष्यों को हासिल किया है। अब तक एस्कोर्ट्स में ऐसा हुआ नहीं है पर हालात को देखते हुये ऐसा होने की काफी सम्भावना बनती है।

मर्दानगी से परे

निर्धारित प्रोडक्शन देने के बावजूद मैनेजमेन्ट द्वारा तनखा काटने पर टूल डाउन नहीं करें तो एस्कोर्ट्स मजदूर क्या करें? ऐसे हालात में कहीं के भी मजदूर हों, क्या कदम उठाने बनता है?

यह एक सीधी-सच्ची बात है कि मजदूरों को ऐसे कदम उठाने चाहियें जो आसान हों, जिनमें खर्चा कम हो, खतरे कम से कम हों और जिनसे सरकार व मैनेजमेन्ट पर लगातार तथा बढता दबाव पड़े। ऐसे कुछ कदम हैं:

- चार-चार, पाँच-पाँच की टोलियों में डी.सी. व डी.एल.सी. के पास शिकायतों का ताँता लगा देना। ऐसा करने में सब मजदूरों की सक्रियता सम्भव बनती है जो कि अपने आप में सतत दबाव बढाने की क्षमता लिये है। कभी-कभार के जलूस ले जाने पर डी.सी. मिल भी गया तो आश्वासन दे कर टाल देता है। एक दिन में मजदूरों की पाँच-सात टोलियाँ जायें, रोज ऐसे ही टोलियों में वरकर जायें तो डी.सी. को कदम उठाने के लिये मजबूर कर सकते हैं। और, टोलियों में कदम उठाते हैं तो हम भीड़ नहीं बनते। हमें भड़काया नहीं जा सकता। परेशान होते सरकारी अधिकारी चाह कर भी लाठी-गोली नहीं चलवा सकते क्योंकि ऐसा करने के लिये टोलियों में उठाये जाते कदम कोई टारगेट ही प्रदान नहीं करते। और फिर, टोलियों में कदम उठाने में सब मजदूरों की अपने-अपने ढँग से सक्रियता सम्भव है। ऐसे में कोई भी हमारी सामुहिक ताकत का सौदा नहीं कर सकता-सकती, कोई भी मजदूरों को बेच नहीं सकता-सकती।
- सरकारी साहबों को शिकायतें करने से बहुत अधिक कारगर है मजदूरों द्वारा आपस में बातें करना, नाते जोड़ना। बिना किन्हीं बिचौलियों के मजदूरों द्वारा आपस में रिश्ते बनाना मैनेजमेन्टों की जड़ों में मट्ठा डालना है। मजदूरों का मजदूरों से बातें करने का एक आसान, सस्ता, बिना खतरे का और बहुत असरदार तरीका है गत्तों पर अपनी बातें लिख कर आठ-आठ, दस-दस मजदूरों का शिफ्टें बदलते वक्त सड़कों के किनारे खड़े होना। अपनी झिझक, अपनी शर्म और बदहाली छिपाती मर्दानगी से पार पा कर झालानी टूल्स के मजदूर गत्ते ले कर सड़कों पर पहुँचे हैं और फरीदाबाद-दिल्ली में हजारों फैक्ट्रियों-दफ्तरों में कार्यरत वरकरों से गहरे रिश्ते बनाये हैं। ड्युटी की भागमभाग में भी हजारों मजदूरों ने रुक कर गत्ते लिये खड़े झालानी टूल्स मजदूरों से अनुभवों के आदान-प्रदान किये हैं और मजदूरों की जिन्दगी के विभिन्न पहलुओं पर चर्चायें की हैं। इससे सरकार और झालानी टूल्स मैनेजमेन्ट पर इतना भारी दबाव पड़ा है कि कई अन्य फैक्ट्रियों की मैनेजमेन्टों की तरह झालानी टूल्स मैनेजमेन्ट वरकरों के पैसे हड़प कर अब तक भाग नहीं सकी है।

मर्दानगी के जाल में नहीं फँस कर टोलियों में कदम उठायेंगे तो एस्कोर्ट्स के सब मजदूर सक्रिय हो सकेंगे और मैनेजमेन्ट की बड़े पैमाने पर छँटनी की स्कीम को फेल कर सकेंगे। झालानी टूल्स मजदूरों द्वारा मैनेजमेन्टों की किलेबन्दी में डाली दरार को चौड़ा करके एस्कोर्ट्स मजदूर अपने बचाव के संग-संग वरकरों की राह आसान कर सकते हैं। ■

एसेल सिल्क मिल्स

प्लाट नम्बर 13 व 13ए, डी एल एफ फेज-2, फरीदाबाद स्थित एसेल सिल्क मिल्स में मैं नवम्बर 1996 से काम कर रहा था। मेरा 2.5.98 को गेट बन्द कर दिया गया। मैं नवम्बर 96 से इस कम्पनी में परसनल डिपार्ट में नियुक्त हुआ था। उस समय मेरी तनख्वाह 1500 रुपये महीने थी। छह महीनों के बाद बढा कर 1800 रुपये कर दी गई थी। वर्तमान में मेरा वेतन 2700 रुपये महीने कर दिया गया था क्योंकि सेक्युरिटी सुपरवाइजर का काम साथ में देखना पड़ता था।

इस कम्पनी के डायरेक्टर अमर सिंह राणा हैं जो फरीदाबाद के जाने-माने प्रिंटिंग मास्टर हैं। कम्पनी के अन्दर फैबरिक प्रोसेसिंग का काम होता है। प्रतिमाह उत्पादन 2 लाख मीटर कपड़े का है। आमदनी बहुत अच्छी है। कम्पनी में स्टाफ 50 एवं वरकर 100 से कुछ ज्यादा ही हैं।

परन्तु एक भी आदमी का वेतन समय पर नहीं मिलता और न किसी आदमी का ई.एस.आई तथा पी.एफ. जमा होता है। कम्पनी में कोई ओरिजिनल सैलेरी रजिस्टर नहीं है। वेतन टुकड़ों में करके बन्धुआ मजदूर की तरह 4-5 महीनों में मिलता है। कुछ पैसे लेन-देन में गड़बड़ करके खा जाते हैं। यदि कोई भी आदमी आवाज उठाने की कोशिश करता है तो उसे फौरन कम्पनी के बाहर कर दिया जाता है।

ई.एस.आई. इन्सपैक्टर भोला कटारिया, लेबर इन्सपैक्टर अहलावत, लेबर अफसर चौहान, पी.एफ. के अधिकारी और पोल्युशन डिपार्ट इन्सपैक्टर, सभी कम्पनी से रिश्वत लेते हैं जिसके चलते कोई भी कार्रवाई करने पर आदमी विफल हो जाता है। पूरे 150 वरकरों के डेली वेजेज और अटेन्डेन्स रजिस्टर के पेपर उपलब्ध हैं जिन पर अमर सिंह राणा के हस्ताक्षर हैं। कम्पनी किसी को कोई अपाइन्टमेन्ट लैटर या पे-स्लिप नहीं देती है ताकि किसी के पास कोई सबूत न रहे।

मेरा गेट बन्द 2.5.98 को हुआ। तब से मुझे कोई हिसाब कम्पनी से नहीं मिला है। इसलिये मैं लेबर कोर्ट में केस करने की सोच रहा हूँ लेकिन डर इस बात का है कि लेबर अफसर चौहान कम्पनी से रिश्वत लेता है।

15.5.98 — उमेश कुमार

चाय और सिनेमा

18 मई को **एस्कोर्ट्स फस्ट प्लान्ट** में कैन्टीन इन्चार्ज, परसनल अफसरों और मैनेजर लोगों ने मजदूरों से कहा कि जो पैसे देंगे उन्हें ही चाय-पकोड़े-लड्डु देंगे। कई डिपार्टमेन्टों में वरकर डेढ साल से इन्हें फ्री ले रहे थे।

वरकर : " डेढ साल तक क्यों फ्री दिये ?"

मैनेजमेन्ट : " जो हुआ सो हुआ। अब नहीं।"

वरकर : " पैसे दे के ही पीनी है तो आज से हम तेरी चाय पीनी ही बन्द कर रहे हैं।"

उस दिन के बाद से चाय-समोसे-बालुशाही आने और जाने लगे। बनाने पड़ते ही क्योंकि पैसे दे कर वरकर माँग लेंगे तो क्या करेंगे ? एकदम तो बना सकते नहीं।

तीन दिन में यह एस्कोर्ट्स फस्ट प्लान्ट की पूरी ट्रैक्टर डिविजन और शॉकर डिविजन में फैल गया। पूरे प्लान्ट में फैलने पर 21 मई को परसनल मैनेजर चिलाना ने डिपार्टमेन्टों में जा कर पूछा :

" चाय क्यों नहीं पीते ?"

वरकर : " पैसे माँग रहे हो इसलिये नहीं पी रहे।"

मैनेजर : " पैसे क्यों नहीं देते ?"

वरकर : "जब तक एग्रीमेन्ट नहीं होगी तब तक पैसे नहीं देंगे क्योंकि हमारे पास पैसे नहीं हैं।"

मैनेजर : "भाई, चाय-समोसे-लड्डु की क्वालिटी व क्वानटिटी हम बढा सकते हैं पर इसके आगे हम नहीं जा सकते।"

वरकर : "आपकी क्वालिटी व क्वानटिटी सही है इसीलिये हम खा रहे हैं। बात यह नहीं है।"

मैनेजर : " बिना पैसे दिये खाना भूल जाओ।"

वरकर : "पैसे दे कर तुम्हारा खाना खायेंगे यह तुम भी भूल जाओ।"

वरकर : " चिलाना साहब, हम चाय पीते हैं तब भी आप नाराज होते हो और चाय नहीं पीते तब भी नाराज होते हो।"

मैनेजर : " जो काम नहीं करते उनकी लिस्ट हमारे पास है....."

और, चाय पर चिक-चिक करती एस्कोर्ट्स मैनेजमेन्ट के एक बड़े साहब की दरियादिली का किस्सा मजेदार है। प्यार के इजहार के नये शोशे, वैलेन्टाइन डे पर 14 फरवरी को निखिल नन्दा ने एक पूरा महाआधुनिक सिनेमा हाल बुक किया और केवल अपनी पत्नी के साथ एक फिल्म देखी।

उषा टेलिहोइस्ट

14/7 मथुरा रोड़ स्थित उषा टेलिहोइस्ट में न तो तालाबन्दी है और न हड़ताल है पर फिर भी 22 मई से 415 परमानेन्ट तथा 200 के करीब कैजुअल व ठेकेदारों के मजदूर फैक्ट्री के बाहर हैं। स्टाफ के लगभग 300 लोग ड्युटी कर रहे है।

उषा टेलिहोइस्ट मैनेजमेन्ट ने 21.8.97 को यूनियन के साथ तीन साल की एग्रीमेन्ट की। इसमें एन.पी.सी. द्वारा बनाई एक इनसैन्टिव स्कीम भी थी। तीन महीने की ट्रायल के एक महीने बाद मैनेजमेन्ट ने गणना में गलती की वजह से मजदूरों को ज्यादा पैसे बनने की कहके स्कीम में सुधार के लिये एन.पी.सी. को लिखा। मजदूरों को बहुत नुकसान वाले एन.पी.सी. के 31.12.97 के सुधार पत्र के आधार पर मैनेजमेन्ट और यूनियन ने 8.4.98 को नया फैसला किया। इसके बाद इस नये फैसले को भी बदलने के लिये मैनेजमेन्ट ने दबाव डालना शुरू कर दिया। दरअसल, 1994-97 की मैनेजमेन्ट-यूनियन एग्रीमेन्ट की इनसैन्टिव स्कीम के आधार पर उषा टेलिहोइस्ट मजदूरों को मिलते पैसों में से दो साल बाद मैनेजमेन्ट ने 500 रुपयों की कटौती की थी और इस बार शुरू में ही 1000-1200 रुपये काटना चाहती है।

इसके लिये मैनेजमेन्टों के आजमाये हुये तरीके के अनुसार उषा टेलिहोइस्ट मैनेजमेन्ट ने मजदूरों पर अपनी शर्तें थोपने के लिये माहौल गरम करना शुरू किया। दो मई को 16 वरकर सस्पैण्ड किये। चार मई से फैक्ट्री में प्रोडक्शन कार्य बन्द। सात मई को 10 और सस्पैण्ड किये। मजदूरों को अप्रैल माह का वेतन नहीं दिया। 22 मई को पुलिस बुला कर सब मजदूरों को सेक्युरिटी ने फैक्ट्री गेट के बाहर रोक दिया। 27 मई को डी.एल.सी. के यहाँ मैनेजमेन्ट ने कहा कि कुछ शर्तों पर साइन करने पर ही मजदूरों को फैक्ट्री में प्रवेश करने देगी पर वे शर्तें नहीं बताई।

प्रत्येक मजदूर की सक्रियता वाली राह ही मैनेजमेन्टों के आजमाये हुये तरीकों को फेल कर सकती है। पुराने ढर्रे पर चलते हुये तारीखों और साहबों के आश्वासनों के भरोसे फैक्ट्री गेट के बाहर कुछ लोग ताश खेलते रहे अथवा बौखला कर मार-पीट की तो उषा टेलिहोइस्ट मजदूरों पर अपनी शर्तें थोपने में मैनेजमेन्ट कामयाब हो जायेगी।■

लालडी फैक्ट्री

11 ए, इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित लालडी फैक्ट्री के मजदूरों के हमें चार खत मिले हैं जिनमें से एक पत्र पर 16 मजदूरों के दस्तखत हैं। जगह की कमी की वजह से इन वरकरों के पूरे खत नहीं छाप पाने का हमें अफसोस है।

लालडी कम्पनी की मैनेजमेन्ट मजदूरों से कोरे कागजों और सादे वाउचरों पर जबरन दस्तखत करवाने के संग-संग अंगूठे के निशान भी लगवाती है। वरकरों की ग्रेच्युटी के पैसे हड़पने के लिये मैनेजमेन्ट सर्विस के दौरान मजदूरों के नाम बदलती रहती है। मजदूरों को नौकरी से निकालने के लिये मैनेजमेन्ट वरकर को गैरहाजिर दिखाती है जबकि वरकर ड्युटी पर आता है पर मैनेजमेन्ट उसे ड्युटी पर लेती ही नहीं है। वेतन 15 तारीख के बाद दिया जाता है और वह भी किस्तों में। फैक्ट्री में एक्सीडेन्ट बहुत होते हैं– हाथ कटते हैं, आँख खराब होती हैं। एक्सीडेन्ट व बीमारी के बाद ई.एस.आई. का मेडिकल फिटनेस लाने पर भी मैनेजमेन्ट ड्युटी पर नहीं लेती। प्रोविडेन्ट फन्ड में मैनेजमेन्ट गड़बड़ करती है। चौकीदारों से 12 घन्टे की ड्युटी लेती है, हफ्ते के सातों दिन, त्यौहार के दिन भी। चौकीदारों को कोई ओवर टाइम व छुट्टी नहीं दी जाती और माँगने पर मैनेजमेन्ट नौकरी से निकाल देती है। छुट्टियाँ नहीं दिये जाने के कारण एक वृद्ध चौकीदार चार साल से घर नहीं जा सके हैं। कई वरकरों को मैनेजमेन्ट बोनस नहीं देती।

लालडी फैक्ट्री मजदूरों ने वेतन बढाने के लिये माँग-पत्र दिया जो कि चन्दीगढ में पेन्डिंग है। इस दौरान मैनेजमेन्ट ने धमकियाँ बढा दी हैं – कार से कुचल डालने तक की धमकी मजदूरों को दी है। वरकरों ने श्रम विभाग में अनेकों शिकायतें की हैं लेकिन श्रम विभाग के अधिकारी मैनेजमेन्ट से डरते हैं इसलिये कोई कार्रवाई नहीं करते।■

गुडबाई सर, माफ कीजिये
मेरे पास टाइम नहीं है
फिर मिलेंगे, अभी नहीं
मेरे पास टाइम नहीं है
बस अब के लिये इतना ही
मेरे पास टाइम नहीं है
मुझे आपकी मदद करके खुशी होती, पर
मेरे पास टाइम नहीं है
मैं स्वीकार नहीं कर सकता, क्योंकि
मेरे पास टाइम नहीं है
मैं सोच नहीं सकती, मैं पढ नहीं सकता
मेरे पास टाइम नहीं है
काश मैं खेल सकती, पर
मेरे पास टाइम नहीं है

–मिशेल क्वोइस्ट, अनुवाद सिन्धु

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।
RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी–546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।